प्रातः क्लास 6/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पूछते हैं, समझाते भी हैं, फिर पूछते भी हैं। अभी बाप को बच्चों ने जाना। भल कोई सर्वव्यापी भी कहते हैं; परन्तु उनके पहले तो बाप को पहचानना तो चाहिए ना, बाप कौन है। पहचान कर कहना चाहिए बाप का निवास-स्थान कहाँ है? बाप को जानते ही नहीं तो उनके निवास-स्थान का कैसे पता पड़े। कह देते वह तो नाम-रूप से न्यारा है। गोया है नहीं। तो जो चीज़ है नहीं, तो उनके रहने का निवास-स्थान कैसे, विचार किया जाए। न जानते है, न कुछ विचार ही करते हैं कोई बात का। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप ने पहले-2 तो अपनी पहचान दी है। पहले अपनी पहचान, फिर रहने के स्थान का समझाते हैं। तुम सभी आत्माएँ हो ज़रूर। बाप अभी कहते हैं मैं तुमको इस रथ द्वारा पहचान देने आया हूँ। मैं तुम सभी का बाप हूँ, जिसको सुप्रीम, परमपिता कहा जाता है। कहती कौन है? आत्मा को भी कोई नहीं जानते। बाप का नाम-रूप, देश-काल नहीं है, तो फिर बच्चों का भी कहाँ से आए। बाप ही नाम-रूप से न्यारा है तो बच्चे फिर कहाँ से आए। बच्चे हैं तो ज़रूर बाप भी है। सिद्ध होता है वह नाम-रूप से न्यारा नहीं है। बच्चों का भी नाम-रूप है। आत्माएँ हैं। आत्मा का रूप ज़रूर है। भल कितना भी सूक्ष्म हो। आकाश सूक्ष्म है तो भी नाम तो है ना 'आकाश'। जैसे यह पोलार सूक्ष्म है, वैसे बाप भी बहुत सूक्ष्म है। बच्चे वर्णन करते हैं वण्डरफुल सितारा है, जो इनमें प्रवेश करती है, जिसको आत्मा कहते हैं। बाप तो रहते ही हैं परमधाम में। जिस वस्तु का रहने का स्थान है, ऊपर नज़र जाती है ना। ऊपर अंगुली से इशारा कर याद करते हैं। तो ज़रूर जिसको याद करते हैं, कोई वस्तु होगी। परमपिता परमात्मा कहते तो हैं ना। फिर भी नाम-रूप से न्यारा कहना, इसको अज्ञान कहा जाता है। बाप को जानना, इसको ज्ञान कहा जाता है। यह भी तुम समझते हो हम पहले अज्ञानी थे। बाप को भी नहीं जानते थे। अपन को भी नहीं जानते थे। अब समझते हो हम आत्मा हैं, न कि शरीर। आत्मा को अविनाशी कहा जाता है। तो ज़रूर कोई चीज़ है ना। अविनाशी कोई नाम नहीं। अविनाशी अर्थात विनाश को नहीं पाती। तो ज़रूर कोई वस्तु है। बच्चों को अच्छी रीति समझाया गया है– मीठे-मीठे बच्चों, जिनको बच्चों-2 कहते हैं वह आत्माएँ अविनाशी हैं। यह आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा बैठ समझाते हैं। यह खेल एक ही बार होता है जबकि बाप आकर बच्चों को अपना परिचय देते हैं, मैं भी पार्टधारी हूँ। कैसे पार्ट बजाता हूँ, यह भी तुम्हारी बुद्धि में है। पुरानी अर्थात पतित आत्मा को नया पावन बनाते हैं, तो शरीर भी तुम्हारा पावन बनता है। यह तो बुद्धि में है ना। अभी तुम बाबा-बाबा कहते हो। यह पार्ट चल रहा है ना। आत्मा कहती है बाबा आया हुआ है हम बच्चों को घर, शान्तिधाम ले जाने लिए। शान्तिधाम के बाद है सुखधाम। शान्तिधाम के बाद दुखधाम हो न सके। नई दुनिया को सुखधाम ही कहा जाता है। यह देवी-देवताएँ अगर चैतन्य होते और इनसे कोई पूछे– आप कहाँ के रहने वाले हो? तो कहेंगे, हम स्वर्ग के रहने वाले हैं। अब यह जड़ मूर्ति नहीं कह सकती। तुम तो कह सकते हो ना हम असल स्वर्ग में रहने वाले देवी-देवताएँ थे। फिर 84 जन्मों का चक्र लगाकर अ(भी) संगम पर आए हैं। यह है ट्रान्सफर होने का पुरुषोत्तम संगमयुग। बच्चे जानते हैं हम बहुत उत्तम पुरुष बनते (हैं)। हम हर 5000 वर्ष बाद सतोप्रधान बनते हैं। सतोप्रधान भी नम्बरवार कहेंगे। तो यह सारा पार्ट आत्मा को मिला हुआ है। ऐसे नहीं कहेंगे कि मनुष्य को पार्ट मिला हुआ है। अहम् आत्मा को पार्ट मिला हुआ है। मैं आत्मा .... जन्म लेता हूँ। हम आत्मा वारिस हैं। वारिस हमेशा मेल होते हैं। फिमेल नहीं। तो अभी तुम बच्चों को यह पक्का समझना है, हम सभी आत्माएँ मेल हैं। सभी को बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। हद के लौकिक बाप से सिर्फ बच्चे को वर्सा मिलता है, बच्ची को नहीं मिलता है। ऐसे भी नहीं आत्मा सदैव फिमेल ही बनती है। बाप समझाते हैं आत्मा कब मेल, कब फिमेल का शरीर लेती है। इस समय तुम सभी मेल्स हो। सभी आत्माओं को एक बाप से वर्सा मिलता है। सभी बच्चे ही बच्चे हैं। सभी का है एक बाप। बाप भी कहते हैं– हे! बच्चों, तुम सभी आत्माएँ मेल्स हो, हमारे रूहानी बच्चे हो। फिर पार्ट बजाने लिए मेल्स-फिमेल्स दोनों चाहिए। तब तो

मनुष्य सृष्टि की वृद्धि होती है। इन बातों को तुम्हारे सिवाय कोई भी नहीं जानते। भल कहते तो हैं, हम सभी ब्रदर्स हैं; परन्तु बेसमझी से। अभी तुम कहते हो बाबा आपसे हमने अनेक बार वर्सा लिया है। आत्मा को यह पक्का हो जाता है। आत्मा बाप को ज़रूर याद करती है। ओ बाबा, रहम करो। बाबा अब आप आओ, हम आपके सभी बच्चे बनेंगे। देह सहित देह के सभी संबंध छोड़ हम आत्मा आपको ही याद करेंगी। बाप ने समझाया है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप से हम वर्सा कैसे पाते हैं, हर 5000 वर्ष बाद हम यह (देवता) कैसे बनते हैं, यह भी जानना चाहिए ना। स्वर्ग का वर्सा किससे मिलता है, यह अभी तुम समझाते हो। बाप तो स्वर्गवासी नहीं है। बच्चों को बनाते हैं। खुद तो और टेम्परेरी नर्कवासी आकर बनते हैं। तुम बाप को बुलाते भी हो जबकि तुम तमोप्रधान बनते हो। यह तमोप्रधान दुनिया है ना। सतोप्रधान थी। 5000 वर्ष पहले इनका राज्य था। इन बातों को, इस पढ़ाई को अभी तुम ही जानते हो। यह है मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई। मानुष से देवता किये करत न लागे वार। बच्चा बना और वारिस हुआ। बाप कहते हैं तुम सभी आत्माएँ मेरे बच्चे हो। तुमको वर्सा देता हूँ। तुम भाई-2 हो। रहने का स्थान मूलवतन है अथवा निर्वाणधाम है, जिसको निराकारी दुनिया भी कहते हैं। सभी आत्माएँ वहाँ रहती हैं। इस सूर्य-चाँद से भी उस पार। वह तुम्हारा स्वीट साइलेंस घर है; परन्तु वहाँ बैठ तो नहीं जाना है। बैठकर क्या करेंगे? वह तो जैसे जड़ अवस्था हो गई। आत्मा जब पार्ट बजावे तब ही चैतन्य कहलावे। है चैतन्य; परन्तु पार्ट न बजावे तो जड़ हुई ना। तुम खड़े हो जाओ यहाँ। हाथ-पाँव न चलाओ, तो जैसे जड़। वहाँ तो नेचरल शांति रहती है। आत्मा जैसे कि जड़ है। पार्ट कुछ भी नहीं बजाती है। शोभा तो पार्ट में है ना। शांतिधाम में क्या शोभा होगा! आत्माएँ पड़ी रहती है। न सुख की, न दुख की भासना। कुछ पार्ट ही नहीं बजाती। तो वहाँ रहने से क्या फायदा! पहले-2 सुख का पार्ट बजाना है। हरेक को पहले से ही पार्ट मिला हुआ है। कोई कहते हैं हमको तो मोक्ष चाहिए। बुदबुदा पानी में मिल गया। बस। आत्मा जैसे कि है नहीं। कुछ भी पार्ट न बजावे तो जड़ कहेंगे। चैतन्य होकर भी जड़ जैसे है, तो क्या फायदा! पार्ट तो सभी को बजाना ही है। मुख्य हीरो-हीरोइन का पार्ट कहा जाता है। तुम बच्चों को हीरोइन का भी टाइटल मिलता है। आत्मा यहाँ पार्ट बजाती है। पहले सुख का राज्य करते हैं, फिर रावण के दुख के राज्य में जाते हैं। अभी बाप कहते हैं तुम बच्चे भी सभी को पैगाम दो। टीचर बन औरों को भी समझाओ। जो टीचर नहीं बनते उनका पद कम होगा। टीचर बनने बिगर किसकी आशीर्वाद कैसे मिलेगी! किसको पैसा देंगे तो उनको खुशी होगी ना। दया करते हैं। अन्दर में समझते हैं ब्रह्माकुमारियाँ हमारे ऊपर बहुत दया करती हैं। जो हमको क्या से क्या बना देती है। यूँ तो महिमा एक बाप की करते हैं वाह! बाबा। आप इन बच्चों द्वारा हमा(रा) कितना कल्याण करते हो। कोई द्वारा तो होता है ना। बाप करन-करावनहार है। तुम्हारे द्वारा कराते हैं। तुम्हारा कल्याण होता है तो फिर और को कलम लगाते हो। जैसे-2 जो सर्विस करते हैं उतना ही ऊँच पद पाते हैं। राज(ा) बनना है तो प्रजा भी बनानी है। फिर जो अच्छे नम्बर में आते हैं वही राजा बनते हैं। माला बनती है ना। अपन से पूछना चाहिए हम माला में क्या नम्बर बनेंगे। नवरत्न मुख्य है ना। बीच में है हीरा बनाने वाला। हीरे को बीच में रखते हैं। माला के ऊपर में फूल भी है ना। अन्त में तुमको पता पड़ेगा कौन सी मुख्य दाना बनते हैं जो डिनायस्टी में आवेंगे। पिछाड़ी में तुमको सभी सा॰ होंगे। देखेंगे कैसे यह सभी सज़ा खाते हैं। शुरू में दिव्यदृष्टि से तुम सूक्ष्मवतन में देखते थे, यह भी गुप्त है। आत्माएँ सज़ा कहाँ खाती हैं? यह भी ड्रामा में पार्ट है। गर्भजेल में सज़ा मिलती है। जेल में धर्मराज को देखते हैं। फिर कहते हैं बाहर निकालो। बीमारी आदि होती है वह भी कर्म का हिसाब है ना। यह सभी समझने की बातें हैं। अभी तुम राइटियस बनते हो। आगे तुम अनराइटियस थे। यह दुनिया ही अनराइटियस है। वह है राइटियस दुनिया। अभी तुम राइट बन रहे हो। राइट उनको कहते हैं जो बाप से बहुत ताकत लेते हैं। तुम विश्व के मालिक बनते हो ना। कितनी ताकत रहती है। हंगामे

आदि की कोई बात ही नहीं। ताकत कम है तो कितनी हंगामे आदि हो जाते हैं। तुम बच्चों को तो ताकत मिलती है आधा कल्प के लिए, फिर भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। एक जैसे ताकत नहीं पा सकते। न एक जैसा पद पा सकते हैं। यह भी पहले से नूँध है। ड्रामा में अनादि नूँध है। कोई पिछाड़ी में आते हैं, एक/दो जन्म लिया और मरा। जैसे दिवाली पर मच्छर होते हैं, रात को जन्म लेते हैं, सुबह को मर जाते हैं। वह तो अनगिनत होते हैं। मनुष्यों की तो फिर भी गिनती होती है। 500 करोड़ जीवात्माएँ रहती हैं। उनकी गिनती कर न सकें। तो मनुष्य भी पिछाड़ी को आया और गया। पहले-2 जो आत्माएँ आती हैं उनकी आयु कितनी रहती है! तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए हम बहुत बड़ी आयु वाले बनेंगे आधा कल्प। तुम फुल पार्ट बजाते हो। बाप तुमको ही समझाते हैं, तुम कैसे फुल पार्ट बजाते हो। पढ़ाई अनुसार ऊपर से आते हो पार्ट बजाने। तुम्हारी यह पढ़ाई है नई दुनिया के लिए। बाप कहते हैं अनेक बार तुमको पढ़ाता हूँ। यह पढ़ाई अविनाशी हो जाती है। आधा कल्प तुम प्रारब्ध पाते हो। उस विनाशी पढ़ाई से सुख भी अल्पकाल लिए मिलता है। अभी कोई बैरिस्टर बनता है तो फिर कल्प बाद भी बैरिस्टर बनेगा। यह भी तुम जानते हो जो भी सभी का पार्ट है, वही पार्ट कल्प-2 बजावेंगे। देवता हो या शूद्र हो, हरेक का पार्ट वही बजता है जो कल्प-2 बजता है। इनमें कोई फ़र्क नहीं हो सकता। हरेक अपना पार्ट बजाते रहते हैं। यह सारा बना-बनाया खेल है। पूछते हैं पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध बड़ी? अब पुरुषार्थ बिगर तो प्रारब्ध मिलती नहीं। पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध मिलती है ड्रामा अनुसार। तो सारा बोझा ड्रामा पर आ जाता है। पुरुषार्थ कोई करते हैं, कोई नहीं करते हैं। आते भी हैं फिर भी पुरुषार्थ नहीं करते, तो प्रारब्ध नहीं मिलती। सारी दुनिया में जो भी एक्ट चलती है, सारा बना बनाया ड्रामा है। आत्मा में पहले से ही पार्ट नुँधा हुआ है आदि से अन्त तक। जैसे तुम्हारी आत्मा में 84 का पार्ट है, हीरा भी बनते हैं, तो कौड़ी जैसे भी बनते हैं। यह भी बातें तुम अभी सुनते हो। स्कूल में अगर कोई नापास हो पड़ता है तो कहेंगे यह ओनाउट(वोर्नआउट) बुद्धि है। धारणा नहीं होती। इसको कहा जाता है वैराइटी झाड़। वैराइटी फीचर्स। यह वैराइटी झाड़ का नॉलेज बाप ही समझाते हैं। कल्प-वृक्ष पर भी समझाते हैं। बड़ के झाड़ का मिसाल भी इस पर है। इनकी शाखाएँ बहुत फैलती हैं। बच्चे समझते हैं हमारी आत्मा अविनाशी है। शरीर तो विनाश हो जावेगा। आत्मा ही धारण करती है। आत्मा 84 जन्म लेती है। शरीर तो बदलती जाती है। आत्मा वही है। आत्मा ही भिन्न-2 शरीर लेकर पार्ट बजाती रहती है। यह नई बात है ना। अभी तुम बच्चों को भी यह समझ मिली है। कल्प पहले भी ऐसे समझा था। बाप आते भी हैं भारत में। तुम सभी को पैगाम देते रहो। कोई भी ऐसा न रहेगा जिसको पैगाम न मिले। पैगाम सुनना भी सभी का हक है। फिर बाप से वर्सा भी लेंगे। कुछ तो सुनेंगे ना। फिर भी बाप के बच्चे हैं ना। बाप समझाते हैं हम तुम आत्माओं का बाप हूँ। मेरे द्वारा इस रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानने से तुम यह पद पाते हो। बाकी सभी मुक्ति में चले जाते। बाप तो सभी की सद्गति करते हैं। कुछ तो राज़ होगा। गाते भी हैं अहो बाबा तेरी लीला..... क्या लीला, कैसी लीला? यह पुरानी दुनिया को बदलने की लीला है। मालूम होना चाहिए ना। मनुष्य ही जानेंगे ना। बाप तुम बच्चों को ही आकर सभी बातें समझाते हैं। बाप नॉलेजफुल है। तुमको भी नॉलेजफुल बनाते हैं। नम्बरवार तुम बनते हो। स्कॉलरशिप लेने वाला नॉलेजफुल कहलावेगा। कैसे उतरते और चढ़ते हैं, यह सभी बातें और कोई की ताकत नहीं जो बता सके। भारत स्वर्ग, फिर नर्क कैसे बनता है, यह तुम्हीं जानो। यह सृष्टि का चक्र बुद्धि में याद रहना चाहिए। इस नॉलेज से ही पद मिलता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग।

सूचना :– चण्डीगढ़ सेन्टर पर ल॰ना॰ और सीढ़ी के चित्र सभी भाषाओं में भेजी गई है। अगर पंजाब के कोई भी सेन्टर्स को यह चित्र चाहिए तो चण्डीगढ़ से मंगा सकते हैं।

2. लखनऊ में किशनी बहन ने अपना सेन्टर बदली किया है, जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं:–

BRAHMA KUMARI KISHNI
90 Khurshed Bagh,
LUCKNOW (U.P.)